नमामि गंगे

गंगा प्रहरी
गंगा के संरक्षक

स्थानीय समुदाय के स्वप्रेरित स्वयंसेवकों का समूह

बुलंदशहर, (उ.प्र.) के गंगा प्रहरियों द्वारा स्वच्छता अभियान

कार्यक्रम की पृष्ठभूमि

गंगा नदी की जैवविविधता पानी की उपलब्धता में कमी, घटते आवास क्षेत्र, प्रदूषण और प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक दोहन के कारण संकट में है। गंगा नदी की पारिस्थितिकी के संरक्षण के लिए और स्थानीय समुदाय की गंगा पर प्रत्यक्ष निर्भरता को कम करने के लिए, राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन एंव भारतीय वन्यजीव संस्थान (NMCG-WII) द्वारा संचालित ''जैवविविधता संरक्षण और गंगा जीर्णोद्धार'' कार्यक्रम के अंर्तगत स्थानीय समुदाय के सदस्यों को गंगा नदी के संरक्षक के रुप में शामिल करने का प्रयास किया जा रहा है, जो कि ''गंगा प्रहरी'' के नाम से जाने जायेगें।

इस पहल का उद्देश्य स्थानीय स्तर के संस्थानों का सहयोग करने और गंगा नदी के प्राकृतिक संसाधनों की गुणवत्ता के अनुश्रवण हेतु स्थानीय समुदायों को संगठित करने के लिये ''गंगा प्रहरी'' नामक स्वप्रेरित संवर्ग (Cadre) का निर्माण करना है। इस उद्देश्य को निम्न प्रकार से प्राप्त किया जा सकता है –

1

एक स्वच्छ, जीवंत गंगा, और गंगा नदी से मिलने वाले लाभों के प्रति समुदाय को जागरुक करना और गंगा नदी के प्रति उनमें अपनत्व की भावना विकसित करना।

2

स्थानीय समुदायों एंव उनकी आजीविका के सतत विकास के लिये विभिन्न संस्थानों से जुड़ाव करना एंव स्वच्छ गंगा हेतु कार्य कर रही विभिन्न संस्थाओं द्वारा चलाई गई परियोजनाओं में समुदाय की भागीदारी बढ़ाना और समन्वय बिंदु (convergence point) स्थापित करना।

3

स्थानीय समुदायों की आजीविका और हितों को स्वच्छ और जीवंत गंगा के साथ जोड़ना एंव सतत विकास को बढ़ावा देना।

गंगा प्रहरी मुख्य रुप से स्थानीय समुदाय के बीच से चिन्हित किया गया, स्वयं सेवकों का वह समूह है, जिसका मुख्य उद्देश्य गंगा नदी की निर्मल धारा को बनाये रखने एंव गंगा नदी की जलीय जैवविविधता के संरक्षण में सहयोग प्रदान करना है। गंगा प्रहरियों की संकल्पना एक ऐसे सामुदायिक समूह के रुप में की गई है जो गंगा नदी की जैवविविधता संरक्षण एंव सामुदायिक महत्व की गतिविधियों जैसे आजीविका संवर्धन, सामुदायिक स्वच्छता एंव जागरूकता में सकिय रूप से भागीदारी करेंगें।

गंगा प्रहरी की पहचान व चयन की प्रकिया

गंगा प्रहरी के माध्यम से सामुदायिक भागीदारी एवं गंगा नदी के प्रति स्थानीय लोगों में आत्मीयता की भावना और गंगा में जलीय जैव विविधता को बढ़ावा देने की संभावना है।

यह गंगा पारिस्थितिकीय तंत्र के प्रति समुदाय को जिम्मेदारी महसूस कराने के साथ ही मानव कल्याण को सुनिश्चित करेगा।

गंगा के किनारे स्थित पांचो राज्यो के चयनित गांवो में सम्पर्क, बैठक, कार्यशाला/प्रशिक्षण के माध्यम से गंगा प्रहरियों की पहचान की गई। ऐसे लोगों को चयनित करने पर बल दिया गया जो स्वप्रेरित हों और गंगा के संरक्षण हेतु अन्य लोगों को प्रेरित कर सकें। गंगा प्रहरियों के चयन हेतु स्थानीय समुदाय, संबन्धित विभाग, शैक्षिक संस्थान ,राष्ट्रीय कैडेट कोर (एन0सी0सी), राष्ट्रीय सेवा योजना (एन0एस0एस), महिला मंगल दल, युवा मंगल दल, नेहरु युवा केन्द्र संगठन और गंगा विचार मंच जैसे अन्य संगठनों से भी सम्पर्क किया गया। गंगा किनारे स्थित सभी गांवों व जिलों से प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करने हेतु संभावित युवाओं से व्यक्तिगत चर्चा की गई। चयन का मुख्य आधार गंगा नदी के प्रति आत्मीयता, उसकी जैव विविधता के संरक्षण एवं स्वच्छता के प्रति उत्साह का होना है। उन गंगा प्रहरियों को प्राथमिकता दी गई जो कि गंगा के किनारे बसे गांवो से संबन्धित हों व उनकी आयु 18 वर्ष से अधिक हो। जल्द ही बाल जल प्रहरी के रूप में प्राथमिक विद्यालयों के छात्र–छात्राओं को भी शामिल करने की प्रक्रिया की जा रही है।

भारतीय वन्य जीव संस्थान की पारिस्थितिकीय तंत्र सर्वेक्षण दल के साथ गंगा प्रहरी, नदिया, पश्चिम बंगाल

क्षमता विकास

गंगा प्रहरी द्वारा की गई जागरूकता बैठक, ग्राम–उमरासू, जिला–पौड़ी गढ़वाल।

इस प्रक्रिया में शामिल होने के बाद गंगा प्रहरियों के लिए गंगा नदी की पारिस्थितिकीय तंत्र की निगरानी और इसकी जैव विविधता के संरक्षण, वृक्षारोपण तकनीक, बैठकों और कार्यशालाओं के माध्यम से जागरुकता और सामुदायिक गतिशीलता से संबंधित प्रशिक्षणों का आयोजन किया जायेगा (चित्र 1)। क्षमता विकास प्रशिक्षणों के पश्चात उन्हें विभिन्न विभागों एंव संगठनों जैसे वन विभाग, राज्य कार्यक्रम प्रबन्धन समूह (NMCG,) गैर सरकारी संगठन आदि द्वारा चलाये जा रहे कार्यक्रमों से जोड़ा जायेगा।

चित्र 1: गंगा प्रहरी द्वारा की जाने वाले क्षमता विकास गतिविधियाँ।

गंगा प्रहरी कैडर का ढांचा

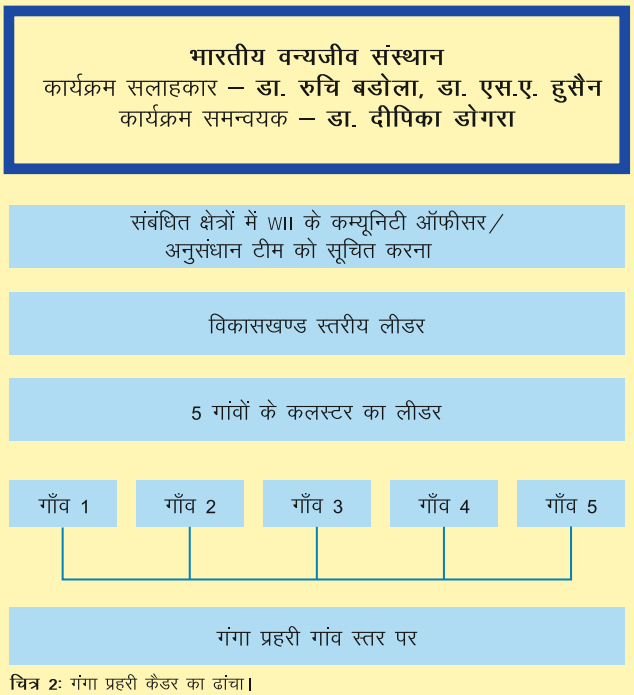

चित्र 2: गंगा प्रहरी कैडर का ढांचा।

गंगा के किनारे स्थित पांचो राज्यों के गांवो में से पांच गांवों का एक 'क्लस्टर' बनाया जायेगा। (चित्र 2) प्रत्येक क्लस्टर में एक लीडर होगा जिसका चयन भारतीय वन्यजीव संस्थान के द्वारा अन्य गंगा प्रहरियों के साथ परामर्श के पश्चात किया जायेगा। ब्लाक लीडर अपने विकासखंड के सभी क्लस्टर को संचालित करेगा। क्लस्टर लीडर व ब्लाक लीडर का चयन क्रमिक रूप से दो माह हेतु किया जायेगा। प्रत्येक क्लस्टर लीडर संबंधित गांवों में प्रतिमाह 10 गतिविधियों का आयोजन करेगा। जिसके लिये NMCG-WII कार्यक्रम से आवश्यक सहयोग किया जायेगा।

क्लस्टर लीडर अपने कार्यक्षेत्र में किये गये कार्यों की रिपोर्ट प्रतिमाह कम्यूनिटी आफिसर/अनुसंधान टीम सदस्य के माध्यम से NMCG-WII टीम को भेजेंगें। (चित्र 2) क्लस्टर लीडर के कार्यों का मूल्यांकन क्षेत्र में उनके प्रर्दशन के आधार पर किया जायेगा और सबसे सक्रिय गंगा प्रहरी को प्रोत्साहन स्वरूप पुरूस्कृत किया जायेगा।

भूमिका और जिम्मेदारी

गंगा प्रहरी समुदाय के बीच से लिये गये लीडर होंगे। ये अन्य व्यक्तियों को गंगा की जैवविविधता के संरक्षण के प्रति प्रेरित करने हेतु प्रेरणास्रोत होंगे। इस प्रकार प्रत्येक गंगा प्रहरी दस गंगा प्रहरियो को जोड़ने का कार्य करेगा। गंगा प्रहरी एक मशाल के रूप में कार्य करेगें, जो अपने क्षेत्रों में एक सक्रिय भूमिका निभायेंगें। गंगा प्रहरी निम्न कार्यों हेतु प्रमुख होंगें –

गंगा प्रहरी द्वारा सामाजिक–आर्थिक सर्वेक्षण एवं वैकल्पिक आजीविका की संभावनाओं पर चर्चा, ग्राम–नयाचोर, जिला–नादिया, पश्चिम बंगाल।

1. अपने क्षेत्रों में गंगा नदी की पारिस्थितिकीय समग्रता को बनाये रखने हेतु स्थानीय समुदायों को संगठित करना।
2. अपने क्षेत्रों में गंगा नदी की पारिस्थितिकीय समग्रता को बनाये रखने हेतु स्थानीय समुदायों को संगठित करना।
3. NMCG-WII टीम को ग्राम के सतत विकास हेतु ग्राम स्तरीय सूक्ष्म योजना के निर्माण एंव क्रियान्वयन में सहयोग करना।
4. गंगा नदी पर प्रत्यक्ष निर्भरता को कम करने के लिये ग्राम स्तर पर संचालित विकास गतिविधियों, आजीविका कार्यक्रमों और जैव विविधता संरक्षण कार्यक्रमों हेतु समन्वय बिंदु का कार्य करना।

मासिक गतिविधियां

प्रतिमाह प्रत्येक गांव में दो गतिविधियां आयोजित की जायेंगी

1.) जैवविविधता संरक्षण

1. भारतीय वन्यजीवन संस्थान एवं राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन के साथ जुडे संगठनों द्वारा किये जाने वाले कार्यक्रमों में जलीयजीवों के बचाव और पुनर्वास की तकनीकी जानकारी देने हेतु आयोजित प्रशिक्षणों के भागीदारी करना।
2. नजदीकी बचाव एवं पुर्नवास केन्द्र एवं वन विभाग के अधिकारियों के बारे में जानकारी एवं उनके सम्पर्क नम्बर अपने पास रखना।
3. अपने –अपने क्षेत्रों में पारिस्थितिकीय सर्वेक्षण में सर्वेक्षण दल का सहयोग करना।
4. घायल जलीय जीवों के बारे में नजदीकी बचाव एवं पुर्नवास केन्द्रो को सूचित करना।
5. जलीय जीवो के अवैध शिकार से संबन्धित गतिविधियो पर निगरानी रखना।
6. NMCG-WII द्वारा स्थापित प्रजनन, बचाव एवं पुर्नवास केन्द्रो का नियमित अनुश्रवण करना।

2) वृक्षारोपण

1. सामुदायिक स्थलों पर वृक्षारोपण करना।
2. स्थानीय समुदायों को व्यक्तिगत जमीन पर वृक्षों (फल एंव छाया देने वाले) को लगाने के लिए प्रेरित करना।
3. रोपित वृक्षो की नियमित देखभाल करना।

3) स्वच्छता संबंधी गतिविधियां

1. गांव एवं उसके आसपास स्वच्छता सम्बन्धी गतिविधियों का आयोजन करना।
2. स्वच्छ किये गये स्थलों का नियमित अनुश्रवण करना।

4) वैकल्पिक आजीविका हेतु कार्यक्रम

1. आजीविका के वैकल्पिक संसाधनो से सम्बन्धित प्रशिक्षण (सरकारी एंव गैर सरकारी) प्राप्त करना।
2. अपने क्षेत्र में चल रही ग्रामीण विकास, महिला सशक्तीकरण, बाल विकास आदि से सम्बन्धित सरकारी एंव गैर सरकारी योजनाओं की जानकारी रखना।

5) अन्य

1. ग्राम स्तरीय सूक्ष्म नियोजन के लिए आंकडे एकत्रित करना एवं योजना बनाने में सहयोग करना।
2. जैव विविधता संरक्षण में भागीदारी के लिए समुदाय को प्रोत्साहित करना।
3. क्षेत्र में बैठक, कार्यशाला और जन जागरुकता कार्यक्रमों को आयोजित करने में कम्यूनिटी ऑफिसर को सहयोग।

जागरूकता कार्यशाला, बैठकें आयोजित करना तथा समुदाय को संगठित करना

चित्र 3:
गंगा प्रहरी की भूमिका एवं जिम्मेदारी

सम्पर्क बिन्दु

उत्तराखण्ड के हरिद्वार जिले में स्कूलीय बच्चों के साथ जागरूकता अभियान चलाते गंगा प्रहरी।

गंगा प्रहरी, स्थानीय समुदायों के साथ संपर्क करने में माध्यम का कार्य करेंगें एवं समुदाय को गंगा की जैवविविधता संरक्षण के लिए आयोजित गतिविधियों से जोड़ने का कार्य करेगें। भारतीय वन्यजीव संस्थान की भूमिका गंगा प्रहरियों के मार्गदर्शक के रुप में होगी। संस्थान द्वारा गंगा प्रहरियों द्वारा जैवविविधता संरक्षण के कार्यक्रमों में समुदाय को जोड़ने के प्रयासों का नियमित अनुश्रवण एवं मूल्यांकन किया जायेगा। संस्थाओं और स्थानीय प्रतिनिधियों के द्वारा संयुक्त रूप से किये जा रहे कार्यों के द्वारा जैवविविधता संरक्षण और संसाधनों के प्रबन्धन के कार्य को मजबूती मिलेगी। इसके लिये पांचो राज्यों के गंगा प्रहरियों को मोबाइल एपलिकेशन (जैसे भुवन गंगा एप, mygov.in, swacchta app.) के माध्यम से जोड़कर व्यापक नेटवर्क का निर्माण किया जाएगा।

वाराणसी जिले के सारनाथ में बचाव एवं पुर्नवास केंद्र में प्रशिक्षण लेते गंगा प्रहरी।

एक गंगा प्रहरी होने का लाभ

देवप्रयाग, उत्तराखण्ड में गंगा प्रहरियों की प्रशिक्षण कार्यशाला।

गंगा प्रहरियों को कौशल विकास प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद प्रमाण पत्र दिया जायेगा। कार्यक्रम में शामिल होने वाले गंगा प्रहरियों का डाटाबेस राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन एवं अन्य संबंधित संगठनों, संस्थानों एंव रेखीय एजेन्सियों को दिया जायेगा ताकि उनके कार्यक्रमों में गंगा प्रहरियों को प्राथमिकता दी जा सके। गंगा प्रहरियों को उनकी रूचि और शैक्षिक योग्यता के अनुसार संबंधित विभागों के कौशल विकास प्रशिक्षण से जोड़ा जाएगा। उनको रोजगार के अवसर प्रदान करने हेतु वन विभाग, सिंचाई विभाग, मत्स्य विभाग, राज्य कार्यक्रम प्रबन्धन समूह (SPMGs) और अन्य अनुसंधान और विकास संगठनों, विभागों से सम्बद्ध किया जायेगा। गंगा प्रहरी को गंगा और इसकी सहायक नदियों में भारतीय वन्यजीव संस्थान तथा अन्य अनुसंस्थान संस्थानों द्वारा किये गए जा रहे क्षेत्र आधारित सर्वेक्षण में कार्य/सहायता के लिए वरीयता दी जाएगी। उच्च शिक्षा प्राप्त करने/प्रशिक्षण/कौशल विकास कार्यक्रमों में प्रतिभाग करने के इच्छुक गंगा प्रहरियों को भारतीय वन्यजीव संस्थान द्वारा विभिन्न शिक्षण संस्थानो में प्रवेश देने हेतु अनुशंसा की जायेगी।

गंगा प्रहरी कार्यक्रम का उद्देश्य गंगा प्रहरियों की आजीविका को सुरक्षित एवं सक्षम बनाना भी है जो कि जैव विविधता संरक्षण, स्वच्छ गंगा के अनुकूल हो। इनके नेतृत्व में की जाने वाली गंगा नदी से संबन्धित गतिविधियां समुदाय में गंगा नदी के प्रति आत्मीयता की भावना को बढ़ाने तथा उसके संरक्षण हेतु कार्य करने के लिये प्रेरणा का एक स्रोत बन जायेंगी। और ये अपनी बेहतरी की दिशा में काम करेगें। इस प्रकार जनता के ये प्रतिनिधि यह सुनिश्चित करेगें कि गंगा की जैव विविधता संरक्षण में समुदाय की महत्वपूर्ण भूमिका रहे एंव कार्यक्रम की समाप्ति के बाद भी गंगा नदी की जैवविविधता संरक्षण से संबंधित गतिविधियों की सततता बनी रहे।

क्या आप गंगा प्रहरी बनना चाहते हैं ?

ईमेलः— gangaprahari@wii.gov.in
फोन नo:— 0135—2646263

कार्यक्रम का प्रभाव

गंगा प्रहरी का यह प्रशिक्षित कैड़र सुनिश्चित करेगा कि

1

गंगा नदी के किनारे स्थित स्थानीय समुदायों द्वारा जैव विविधता के सुरक्षा एंव संरक्षण हेतु कार्य किया जा रहा है।

2

गंगा के किनारे रहने वाले समुदायो को जैव संसाधनो के सतत उपयोग संबंधी विधियां अपनाने लिए प्रेरित करना।

3

अपने गांव के आसपास गंगा के किनारे की स्वच्छता को सुनिश्चित करना।

4

स्वच्छ और जीवंत गंगा के लिए जमीनी स्तर पर एक आन्दोलन प्रारंभ करना।

गंगा प्रहरी, भागलपुर, बिहार

www.wii.gov.in/national_mission_for_clean_ganga

XPRESSIONS: 9219552563 | DOC. NO. XP5040119161 8

सत्यमेव जयते

राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन
National Mission for Clean Ganga
गंगा सेवा भारत सेवा

भारतीय वन्यजीव संस्थान
Wildlife Institute of India

NMCG
National Mission for Clean Ganga, Ministry of Water Resources, River Development & Ganga Rejuvenation

GACMC
Ganga Aqualife Conservation Monitoring Centre

WII
Chandrabani, Dehradun-248001 Uttarakhand

For further details please contact:
e: *ruchi@wii.gov.in, deepika@wii.gov.in*
Tel. *+91 135 2646263 (O),* ***Fax:*** *+91 135 2640117*

This initiative is financed through the project 'Biodiversity Conservation and Ganga Rejuvenation' initiated by the Wildlife Institute of India (WII) under the NMCG Project.